विचार बिन्दु

मनुष्य का कत्तर्व्य है कि वह उदार बनने से पहले त्यागी बने। –डिकेंस

वसंत में वनानुभव

एकाग्र मन से ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का प्रयोग कर वनों की समग्रता का अनुभव (देखना, सुनना, सूंघना, स्पर्श करना, स्वाद लेना) वनानुभव कहलाता है! चरकसंहिता में वसंत की आरोग्यदायी ऋतुचर्या का वर्णन करते समय भगवान आत्रेय ने वसंत में वनानुभव का महत्त्व स्पष्ट किया है (च.सू.6.22-26, अंश): वसन्तेऽनुभवेत्काननानांयौवनम्।। तात्पर्य यह है कि उद्यानों एवं वनों में घूमना, पैदल चलना, पुष्पित –पल्लवित वनों का अनुभव लेना चाहिए। प्रकृति–अनुभव और वनानुभव चिकित्सा का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह आयुर्वेद की एक श्रेष्ठ गैर–औषधीय चिकित्सा है जिस पर समकालीन शोध भी बहुत समृद्ध है। हरियाली, प्राकृतिक वातावरण, वनों और उपवनों में प्रकृति–अनुभव या दीर्घकालिक जुड़ाव का प्रसन्नता में योगदान पर पूर्व में यहाँ प्रमाण–आधारित ठोस विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था। परन्तु क्या यह हरियाली में किया गया व्यायाम और योग तुलनात्मक रूप से बेहतर स्वास्थ्य भी प्रदान करता है? वर्ष 2023 के प्रारंभ में आज तक प्रकाशित शोध को समाहित कर आज की चर्चा पुन: इसी विषय पर है।

संहिताओं में स्वास्थ्य–रक्षण और रोगोपचार दोनों के लिये ऐसे अनेक सन्दर्भ हैं (देखें, च.चि.3.260–266; च.चि.2/3, 26–30, च.चि.4.106–109; च.वि.6.17, सु.उ.47.55–57 आदि)। उक्त सभी सन्दर्भ केवल उदाहरणार्थ और प्राचीनता दर्शित करने के उद्देश्य से उद्धृत किये गये हैं। समकालीन शोध में पिछले कई दशकों से विभिन्न विषयों के विद्वानों ने अपनी विधा के अनुसार इस बात की ओर ध्यान खींचा है कि प्रकृति से जुड़ने और मानव स्वास्थ्य में सुधार के बीच सकारात्मक संबंध है। यह आम समझ की बात है कि प्रकृति और पर्यावरण के सानिध्य में समय बिताना हमारे लिये स्वाभाविक रूप से अच्छा हो सकता है। प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों, प्राचीनकाल से चली आ रही सांस्कृतिक परम्पराओं और चिकित्सा पद्धतियों में इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि मानव सभ्यता का अपने स्वास्थ्य, चिकित्सा और आध्यात्मिकता के लिये प्रकृति के साथ अन्योन्याश्रितजुड़ाव रहा है।

जहाँ तक हरियाली का शारीरिक और मनोरोगों को रोकने में योगदान है उस पर बहुत शोध है और उसका सम्पूर्ण विश्लेषण यहाँ देना संभव नहीं है। इस विषय में एक बेहद उपयोगी पुस्तक 'द एक्सपीरियंस ऑफ़ नेचर' – 'अ साइकोलॉजिकल पर्सपेक्टिव' वर्ष 1989 में प्रकाशित हुई थी। राचेलकपलान और स्टेफेनकपलान की यह पुस्तक इस विषय में विश्व की सर्वाधिक संदर्भित पुस्तक है जिसे लगभग 8000 प्रकाशनों में संदर्भित किया गया है। प्राकृतिक वातावरण, लोगों और उनके बीच के संबंधों का एक प्रमाण–आधारित लेखा–जोखा इस पुस्तक में है। लेखकों ने यह समझने की कोशिश की है कि लोग प्रकृति का अनुभव कैसे करते हैं और वे किस प्रकार के प्राकृतिक वातावरण पसंद करते हैं, वे जंगल के अनुभवों से क्या मनोवैज्ञानिक लाभ उठाते हैं, और हमारे आसपास के उद्यान लोगों के लिये क्यों महत्वपूर्ण हैं। इस विषय में अद्यतन स्थिति को 832 अध्ययनों के आधार पर की गई 16 मेटा–एनालिसिस को मिलाकर की गई एक भारी मेटा–एनालिसिस विश्व में अब तक का श्रेष्ठ प्रमाण भी यही निष्कर्ष देती है (देखें, सी. बरगन–जैसन इत्यादि, बायोलॉजिकल कंसर्वेशन, 277, 109842, 2023)। वर्ष 2022 में 8 मेटा–एनालिसिसअतिरक्त प्रमाण प्रदान करती हैं कि वनानुभव शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करता है। बच्चों के कल्याण के लिए भी वनानुभव व प्रकृति–अनुभव आवश्यक हैं (देखें, टी. अरोला इत्यादि, जर्नलऑफ़एनवायर्नमेंटलसाइकोलॉजी, 85,101913, 2023)।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि ऐसा नहीं है कि प्रकृति के सभी आयाम स्वास्थ्यवर्धक और सुरक्षित ही हों। कई प्राकृतिक स्थल मानव में अकेले डर पैदा कर सकते हैं। जो हवा, पानी और मिट्टी स्वास्थ्य के लिये सर्वथा उपयुक्त होती है, वही प्रदूषित होने या प्राकृतिक आपदाओं के स्वरुप में आने पर स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकती हैं। प्राकृतिक वातावरण के जो प्राणी बहुत सुन्दर लगते हैं उनमें से बहुत हिंसक भी हो सकते हैं। इन बातों को ध्यान में रखते हुये प्रकृति–अनुभव अपने अन्य रूपों में हमारे स्वास्थ्य की स्थिति को निर्धारित करते हैं। इस दृष्टिकोण से प्रकृति और पर्यावरण को निहारना, प्राकृतिक वातावरण में घूमना–फिरना स्वास्थ्यकर होता है।

प्रकृति–अनुभव किन कारणों से हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है? या अन्य शब्दों में कहें तो प्रकृति से जुड़ाव के स्वास्थ्यकर होने की मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन क्या है? अनेक अध्ययनों के प्रमाण स्पष्ट करते हैं कि प्रकृति का मानव शरीर और मन पर स्वास्थ्यकर प्रभाव स्वास्थ्य के विविध आयामों को बेहतर करने में प्राकृतिक वातावरणों की भूमिका के कारण होता है। उदाहरण के लिये प्रकृति–अनुभव से स्वास्थ्य में सुधार की मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन को मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद में कमी, मन की प्रसन्नता में बढ़ोत्तरी, अच्छी निद्रा, मनोहारी अनुभूति, दर्द–नियंत्रण, बेहतर सामाजिक संपर्क, व्यायाम में बढ़ोत्तरी, हृदय रोगों में कमी, प्रतिरक्षा तंत्र में सुधार आदि के प्रकाश में देखा जा सकता है। वनानुभव–चिकित्सा (वनों में घूम–फिर कर प्रकृति का अनुभव करना) इम्यूनिटी भी बढ़ाती है (देखें, वाय. चे इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(16), 2021)।

शहरों में हरियाली से स्वास्थ्य लाभ के बारे में वर्ष 1800 के बाद से कई छिटपुट अध्ययन मिलते हैं और शहरी विकास में इन्हें शामिल करने के प्रयास भी दुनिया भर में हुये है। इन सब अध्ययनों में एक सन्देश मिल रहा था कि हरियाली को अनुभूत करना या हरियाली का एक्सपोज़र स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है, परन्तु व्यवस्थित समीक्षा और मेटा–एनालिसिस अब आना शुरू हुये हैं। हाल ही में हरियाली से मिलाने वाले लगभग 100 प्रकार के स्वास्थ्य–लाभ के निष्कर्षों वाले 143 अध्ययनों को शामिल कर एक मेटा–एनालिसिस की गयी। इससे कई रोचक परिणाम मिले। जैसे–जैसे हरियाली के साथ जुड़ाव बढ़ा वैसे–वैसे लार के कोर्टिसोल, हृदय गति, व डायस्टोलिक रक्तचाप में कमी पायी गयी। एचडीएलकोलेस्ट्रॉल व हृदय गति की परिवर्तनशीलता में बेहतरी हुई। समय–पूर्व प्रसव–जोखिम, मधुमेह, तथा समस्त–कारण मृत्यु दर (आल–कॉजमोर्टेलिटी) और हृदय रोग मृत्यु दर में भी कमी पाई गयी। स्ट्रोक, उच्च रक्तचाप, डिस्लिपीडेमिया, अस्थमा, और कोरोनरी हृदय रोग की घटनाओं में भी कमी होती गयी। अलग अलग अध्ययनों को देखने पर यह भी स्पष्ट हुआ कि स्वास्थ्य परिणामों में 66.7 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक बेहतरी हुई है। इनमें न्यूरोलॉजिकल, कैंसर, व श्वसन रोगों से मृत्यु दर में कमी भी पाई गयी (देखें, सी. टोहिग–बेनेट, ए. जोन्स, एनवायर्नमेंटलरिसर्च, 166: 628–637, 2018)।

वनानुभव और प्रकृति-अनुभव अनेक रूपों में हो सकता है। हमारे आसपास हरियाली को बढ़ावा देना, वनों उपवनों में घूमना, प्राकृतिक स्थलों में सैर-सपाटा, प्रतिदिन समीपवर्ती बाग-बगीचों में जाकर कम से कम एक घंटे का समय बिताना, कार्य-स्थलों में हरियाली बढाने के लिये छोटे-छोटे गार्डन या बगीची विकसित करना, बैठने के स्थान में खिड़की से दिखने वाला हरा-भरा दृश्य, कार्यालय में पांच मिनट का ब्रेक लेकर हरियाली में टहल कर आना आदि सब छोटे-छोटे ऐसे कार्य हैं, जिनके माध्यम से हमारा प्रकृति के साथ जुड़ाव बना रहता है।

इस विषय में सबसे भारी अध्ययन जिसका वित्त–पोषण विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किया गया था, वह वर्ष 2019 में दुनिया के एक अगुआजर्नल में प्रकाशित हुई। हरियाली को स्वास्थ्य–निर्धारक, स्वास्थ्य में सुधार, और विभिन्न प्रसन्नता के लिये उपयोगी माना जाता रहा है। इस व्यवस्थित अध्ययन मेंविश्व भर के अनुदैर्ध्य अध्ययनों से प्राप्त प्रमाणों की इस बात के लिये समीक्षा की गयी कि हरियाली, पार्क्स, गार्डन्स आदि की उपलब्धता का सकल मृत्यु दर में प्रभाव क्या है। इस मेटा–एनालिसिस में प्रारम्भ में 9298 अध्ययन और 13 अन्य अध्ययनों की पहचान की गयी। इनमें से 9234 (99प्रतिशत) अध्ययनों को शीर्षक और सारांश जांचने के बाद अपग करते हुये शेष 77 अध्ययनों में से 68 (88प्रतिशत) को सम्मिलित किया गया। उक्त के साथ ही मात्रात्मक मूल्यांकन हेतु नौ (12प्रतिशत) अध्ययनों को शामिल किया। इनमें सात देशों के 8.32 लाख व्यक्ति शामिल थे। कुल मिलाकर निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि आसपास की हरियाली और सकल–कारण मृत्यु दर के बीच एक व्युत्क्रम रिश्ते का प्रमाण पाया गया। कहने का तात्पर्य यह कि जैसे–जैसे हरियाली की उपस्थिति बढ़ती जाती है वैसे–वैसे सभी कारणों से मृत्यु दर में कमी आती जाती है। सन्देश यह है कि मानव समाज जहाँ रहता और काम करता है वहां हरियाली बढ़ाने और जैव–विविधता संरक्षण को बढ़ावा देना मानव स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है (देखें, डी. रोजसरुएडा आदि, द लैंसेटप्लेनेटरी हेल्थ, 3,11:ई469–ई477,2019)।

एक अन्य महत्वपूर्ण मेटा–एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न पर जांच की गयी कि गर्भावस्था में प्रतिकूल परिणामों पर आवासीय हरियाली का क्या प्रभाव रहता है। इसमें कुल 36 अध्ययन शामिल थे और कुल मिलाकर 1.19 करोड़ (11.9 मिलियन) प्रतिभागी थे। परिणाम स्पष्ट करते हैं कि हरियाली वाले स्थलों में जन्म के समय न्यूनतम वजन का जोखिम उच्च स्तर की हरियाली वाले समूह में काफी कम था। गर्भावधि उम्र कम रहने की संभावना भी उच्च हरियाली वाले क्षेत्रों में घटी पायी गयी। इसके अलावा अधिक हरियाली वाले क्षेत्रों में मातृ–जोखिम कम पाया गया और मानसिक विकारों में भी कमी पायी गयी। यह समीक्षा आवासीय हरियाली और गर्भावस्था के प्रतिकूल परिणामों के बीच एक उलटे रिश्ता होने की पुष्टि करती है। अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट कर देते हैं कि हरियाली गर्भवती महिलाओं के लिये जोखिम घटाती है (वाइ. झान आदि, साइंसऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 718: आर्ट. 137420, 2020)। हाल ही में वनानुभव को मानसिक स्वास्थ्य में बेहतरी लाने के ठोस प्रमाण मेटा–एनालिसिस से प्राप्त हुए हैं (देखें, वाई. कोटेरा इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड एडिक्शन, 20(1):337–361, 2022)। एक अन्य मेटा–एनालिसिस से सिद्ध होता है कि वनानुभव अवसाद व चिंता से बचाने हेतु श्रेष्ठ गैर–औषधीय युक्ति है (पी.एस. येओन इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(23): 2021)। रैंडमाइज्डकंट्रोल्डट्रायल्स की मेटा–एनालिसिस का निष्कर्ष भी स्पष्ट करते हैं कि वन–आधारित गैर–औषधीय चिकित्सकीय दखल मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं (देखें, एम.जे. कांग इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 19(8): 2022)। हाल ही में 52 अध्ययनों में समाहित 5.2 मिलियन लोगों के आंकड़ों को लेकर की गई मेटा–एनालिसिस सिद्ध करती है कि ग्रीन–स्पेस के आसपास रहने वाले लोगों में डायास्टोलिक और सिस्टोलिक ब्लडप्रेशर में सुधार होता है (देखें, वाई. झाओ इत्यादि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 817: 152513,2022)

हमारा समाज आज शहरीकरण, संसाधन–विदोहन और जीवनशैली में बदलाव के कारण प्रकृति–उन्मुखता से प्रकृति–विमुखता की ओर जा रहा है। संहिताओं, शोध और अनुभव की त्रिवेणी से उत्पन्न ज्ञान इस बात के पुख्ता प्रमाण दर्शित करता है कि प्रकृति–अनुभव मानव स्वास्थ्य के लिये अनिवार्य है। शोध स्पष्ट करती है कि प्रकृति–अनुभव से स्वास्थ्य–लाभ के मूल में वायु गुणवत्ता, शारीरिक गतिविधि और व्यायाम, सामाजिक सामंजस्य और तनाव में कमी आदि कारक हैं।

इस तमाम चर्चा का मूल संदेश यह है कि पर्यावरण के साथ हमारे संबंध हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। वनानुभव और प्रकृति–अनुभव अनेक रूपों में हो सकता है। हमारे आसपास हरियाली को बढ़ावा देना, वनों उपवनों में घूमना, प्राकृतिक स्थलों में सैर–सपाटा, प्रतिदिन समीपवर्ती बाग–बगीचों में जाकर कम से कम एक घंटे का समय बिताना, कार्य–स्थलों में हरियाली बढाने के लिये छोटे–छोटे गार्डन या बगीची विकसित करना, बैठने के स्थान में खिड़की से दिखने वाला हरा–भरा दृश्य, कार्यालय में पांच मिनट का ब्रेक लेकर हरियाली में टहल कर आना आदि सब छोटे–छोटे ऐसे कार्य हैं, जिनके माध्यम से हमारा प्रकृति के साथ जुड़ाव बना रहता है। इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह याद रखने योग्य है कि चूंकि प्रतिदिन व्यायाम और योग करना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है अत: व्यायाम और योग वनों, हरे–भरे स्थलों, बाग–बगीचों, नदी या झील के समीप किया जाये तो शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिये अधिक उपयोगी है। बच्चों को भी वनानुभव और प्रकृति–अनुभव कराइये। हरियाली से जुड़ाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है। जीवन के प्रारम्भिक काल में प्रकृति से जुड़ाव मानव और प्रकृति के मध्य आजीवन सार्थक रिश्ता बनाने हेतु आवश्यक है। प्रकृति के साथ जुडे रहिये। योग और व्यायाम कीजिये। आनंदित रहिये। स्वस्थ रहिये।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

शिक्षा पर अल्प बजट से नहीं बन पाएगा विकसित भारत, जरूरी है शिक्षा पर जीडीपी का 6 प्रतिशत व्यय

प्रो. रमेश बैरवा

केंद्रीय वित्तमंत्री डॉ. निर्मला सीतारमन ने समावेशी, विकसित भारत के लिए वित्तीय वर्ष 2025–26 का बजट पेश किया है। यह बजट ऐसे हालातों में पेश किया है जब भारत विश्व की 5वीं अर्थव्यवस्था तो बन गया है लेकिन मानव विकास सूचकांक में 134वें पायदान पर है। साथ ही केंद्र सरकार राजकोषीय घाटा कम रखने के नीतिगत दबाव में सीमित व्यय करने के दुष्चक्र में फंसी हुई है। पूर्व की तरह इस बार भी एक बार फिर सभी के लिए अफोर्डेबल क्वालिटी एजुकेशन का वादा किया है। लेकिन शिक्षा पर बजट बहुत ही कम रखा गया है जो कि निराशाजनक है।

वित्तीय वर्ष 2025–26 के लिए 5065345 करोड़ रुपए का अनुमानित बजट पेश किया गया है। यह वित्तीय वर्ष 2025–26 के लिए अनुमानित जीडीपी 35697923 करोड़ रुपए का 14.18 प्रतिशत है। वित्तीय वर्ष 2024–25 में यह बजट खर्च 4820512 करोड़ रुपए था जो कि जीडीपी का 14.87 प्रतिशत था। जीडीपी की दृष्टि से गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष का बजट 0.69 प्रतिशत कम रखा है।

यह तो तब है जब गत वर्ष के अनुमानित बजट 4820512 करोड़ रुपए में से 4716487 करोड़ रुपए ही व्यय कर 104025 करोड़ रुपए बचा ले रहे हैं। इस बची राशि को जोड़कर देखा जाए तो गत वर्ष की तुलना में इस बजट में असली बढ़ोतरी सिर्फ 140808 करोड़ रुपए की ही है। हालांकि प्रथम दृष्टया यह वृद्धि 2,44,833 करोड़ रुपए के साथ 5 प्रतिशत की दिखती है।

वित्तीय वर्ष 2024–25 में शिक्षा पर अनुमानित व्यय 125638 करोड़ रुपए था जोकि जीडीपी का 0.38 प्रतिशत था। इस बार के बजट में शिक्षा पर अनुमानित बजट 128650 करोड़ रुपए रखा है जो कि जीडीपी का 0.36 प्रतिशत है। इस प्रकार जीडीपी व्यय की दृष्टि से वृद्धि के बजाय शिक्षा पर 0.02 की कमी की गई है। शिक्षा पर गत वर्ष के बजट 125638 करोड़ रुपए में से सिर्फ 114054 करोड़ रुपए खर्च कर 11584 करोड़ रुपए बचा लिए। पीएम श्री योजना के 6050 करोड़ में से 4500 करोड़ खर्च कर 1550 करोड़ रुपए बचा लिए गए है। इस वर्ष के लिए इस मद में 7500 करोड़ रुपए का अनुमानित व्यय रखा है। पीएम ऊषा जिसे पूर्व में रुसा के नाम से जाना जाता था के गत वर्ष के बजट 1815 करोड़ रुपए में से 895 खर्च कर 920 करोड़ रुपए बचा लिए और इस वर्ष के लिए फिर से वही 1815 करोड़ रुपए का बजट रखा है।

अनुसूचित जाति के लिए पोस्ट मैट्रिक स्कॉलरशिप हेतु गत वर्ष के 6360 करोड़ रुपए के बजट में से 5500 व्यय किए जा रहे हैं जिससे 860 करोड़ रुपए की बचत होगी। फिर से इस मद में राशि वही 6360 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की गई है।

पीएम उच्चतर शिक्षा प्रोत्साहन योजना में 1558 करोड़ रुपए का बजट रखा था जिसमें से सिर्फ 1000 करोड़ रुपए खर्च किए हैं, 558 करोड़ रुपए बचा कर गत वर्ष की बजट राशि में सिर्फ दो करोड़ रुपए और बढ़कर इसे 1560 रुपए किया गया है। नई आईटीआई अध्ययन योजना के 1000 करोड़ रुपए में से सिर्फ 294 रुपए खर्च किए हैं जिससे 706 करोड़ रुपए बचा लिए गए हैं। खेलो इंडिया के 900 करोड़ के बजट में से 800 करोड़ रुपए व्यय किए हैं और 100 करोड़ रुपए बचा लिए। कौशल भारत कार्यक्रम के लिए 2686 करोड़ रुपए में से 2318 करोड़ रुपए खर्च कर 532 करोड़ की बचत की गई है। राष्ट्रीय शहरी डिजिटल मिशन के 1150 करोड़ रुपए में से सिर्फ और सिर्फ 109 करोड़ रुपए ही खर्च किए हैं जिससे 1041 करोड़ रुपए की बचत होगी। गत वर्ष के बजट 1150 की तुलना में अब इसे बढ़ाकर 1250 करोड़ रुपए किया गया है।

इससे स्पष्ट है कि इस बजट में भी शिक्षा पर बहुत अल्प व्यय का प्रावधान है। जीडीपी की दृष्टि से शिक्षा सहित कुल बजट में वास्तविक कमी किए जाने से समावेशी शिक्षा का, समावेशी विकास का, विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करना बहुत मुश्किल होगा। अत: केंद्र सरकार को पुनर्विचार कर शिक्षा पर बजट अच्छे से बढ़ाना चाहिए ताकि हम बहुत जल्द जीडीपी का शिक्षा पर 6 प्रतिशत व्यय कर सभी के लिए अफोर्डेबल क्वालिटी एजुकेशन के राष्ट्रीय लक्ष्य की और तेजी से अग्रसर हो सके, सही मायने में भारत को विकसित बना सके।

–डॉ. रमेश बैरवा,
प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान एवं प्रदेश संयोजक, राजस्थान विवि. एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ रुक्टा डेमोक्रेटिक

लड़कियां किसी से कम नहीं है और वर्तमान में बच्चियां ज्यादा आगे बढ़ रही हैं : बागड़े

राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागड़े ने तेजास्थली मूण्डवा (नागौर) का दौरा किया

- **वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए राज्यपाल, ऑडिटोरियम व हॉस्टल का लोकार्पण किया**

राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागड़े ने कार्यक्रम को संबोधित किया।

नागौर, (निसं)। राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागड़े शनिवार को मारवाड़ मूण्डवा स्थित वीर तेजा महिला शिक्षण संस्थान के वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि के रूप में तेजास्थली पहुंचे। हैलीपेड पर राज्य किसान आयोग के अध्यक्ष सीआर चौधरी ने बागड़े का अभिनंदन किया। राज्यपाल बागड़े के साथ केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल विकास एवं उद्यिमता (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी भी आए।

राज्यपाल बागड़े ने पूनम कुलरिया व धर्म कुलरिया द्वारा नवनिर्मित संत दुलाराम कुलरिया व संत पदमाराम कुलरिया आडिटोरियम तथा सुरेश राठी द्वारा नवनिर्मित आयचुकी देवी गंगाराम राठी हॉस्टल भवनों का लोकार्पण किया। साथ ही माधव दास मोदी द्वारा बीपीएड कॉलेज के भवन निर्माण का शिलान्यास भी किया। राज्यपाल बागड़े ने वीर तेजा महिला शिक्षण संस्थान के वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि के रूप में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित करने के उन्होंने अपने सम्बोधन में लोक देवता वीर तेजाजी को याद करते हुए महिला शिक्षा को समर्पित संस्थान की सराहना की। उन्होंने कहा कि मुझे अच्छा लगा कि बिना किसी लाभ के यह संस्थान संचालित हो रहा है, यहां हर जाति–धर्म की बालिकाएं यहां शिक्षा प्राप्त कर रही है।

बागड़े ने कहा कि लड़किया किसी से कम नहीं है और वर्तमान में बच्चियां ज्यादा आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि अच्छा अभ्यास करें, इसी की जरूरत है। राज्यपाल ने कहा कि जिसके पास कौशल होगा, उसे रोजगार मिल जाएगा, इसलिए भारत सरकार कौशल विकास का प्रशिक्षण दे रही है। हमारे हाथ में हाथ में कला है तो सफल होंगे। बच्चों से कहा कि शारीरिक शक्ति बढ़ाओ, इतनी बढ़ाओ कि दूसरों को डर लगना चाहिए। अपना कौशल और बौद्धिक क्षमता बढ़ाने वाला ही आगे जाएगा। इस पूर्व केन्द्रीय मंत्री जयंत चौधरी ने बच्चों के कार्यक्रम की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह संस्थान मेरे लिए किसी मंदिर से कम नहीं है। चौधरी ने कहा कि राजस्थान की धरती में कुछ खास है, सीमित संसाधनों में मेहनत करके आगे बढ़ रहे हो। यहां एक दूसरे के सहयोग की भावना है। यही भारतीयता है, राष्ट्रवाद है। उन्होंने कहा कि भारत का कामगार दुनियाभर में प्रसिद्ध है। इसलिए कौशल विकास के क्षेत्र में भारत सरकार काम कर रही है। उन्होंने नागौरी पान मैथी का जिक्र करते हुए कहा कि फूड प्रोसेसिंग के क्षेत्र में बड़ी संभावनाएं हैं।

संस्थान के संरक्षक व राज्य किसान आयोग के अध्यक्ष सीआर चौधरी ने कहा कि बागड़े जी ने महाराष्ट्र में डेयरी सहकारिता आंदोलन में महत्ती भूमिका निभाई जिससे हम भी सीखें सकते हैं। उन्होंने स्वर्गीय भवरसिंह डांगावास को याद करते हुए उनके विज़न की सराहना की साथ ही बालिका शिक्षा में योगदान के लिए भामाशाहों का अभिनंदन किया।

कार्यक्रम में जिला कलेक्टर अरुण कुमार पुरोहित, पुलिस अधीक्षक नारायण टोगस, कार्यकारी अध्यक्ष संजीव सिंह डांगावास, सचिव सुखराम फिड़ौदा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष रामाकिशन झिंझा, सदस्य जस्साराम धोलिया, पुखराज धोलिया, रामनिवास कापड़ी, खींवराज कापड़ी, भंवराराम सियाक, गेनाराम बिडियासर, दौलतराम गोदारा, भंवराराम चोयल, सीताराम ताड़ा, प्रकाश भंवरिया, प्रशासक ऊषा चौधरी, निदेशक शीला दत्ता, कार्यकारणी सदस्य, जिला स्तरीय अधिकारी, संस्थान प्रबंधन एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

भारत-पाक बॉर्डर पर ड्रोन एक्टिविटी बढ़ेगी

बीएसएफ पश्चिमी कमान के स्पेशल डीजी बीकानेर पहुंचे

- **बीएसएफ के स्पेशल डीजी सतीश एस खंडारे सीमाओं की सुरक्षा का जायजा लेंगे और सीमाओं पर तैनात जवानों से रूबरू होंगे**

बीकानेर, (निसं)। बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स (बीएसएफ) के स्पेशल डीजी सतीश एस खंडारे देर रात बीकानेर पहुंचे। चंडीगढ़ मुख्यालय से बीकानेर आए खंडारे यहां सीमा पर पाकिस्तानी तस्करों की ओर से होने वाली ड्रोन एक्टिविटी पर जवानों के साथ संवाद करेंगे। बीएसएफ ने ड्रोन एक्टिविटी पर सख्ती और बढ़ाने की तैयारी की है।

जानकारी के अनुसार बीएसएफ के स्पेशल डीजी सतीश एस खंडारे देर रात बीकानेर स्थित क्षेत्रीय मुख्यालय पहुंचे। इस दौरान आईजी एम एल गर्ग और फ्रंटियर हेडक्वार्टर जोधपुर के डीआईजी इंटेलिजेंस विदुर भारद्वाज भी उनके साथ रहे। बीकानेर पहुंचने पर बीएसएफ डीआईजी अजय लूथरा, कमांडेंट नवीन मोहन शर्मा, डिप्टी कमांडेंट इंटेलिजेंस महेश चंद जाट ने उनकी अगवानी की।

अपने तीन दिवसीय दौरे के दौरान खंडारे सीमाओं की सुरक्षा का जायजा लेंगे और सीमाओं पर तैनात जवानों से रूबरू होंगे। भारत पाकिस्तान की बीकानेर से सटी सीमा पर वो किसी पोस्ट पर पहुंचकर जवानों के साथ संवाद भी कर सकते हैं। इस दौरे के दौरान वो सीमावर्ती क्षेत्र में वर्तमान में बढ़ती हुई ड्रोन गतिविधियों और ड्रोन के माध्यम से होने वाली ड्रग तस्करी की घटनाओं के बारे में जानकारी लेंगे। ड्रोन के माध्यम से होने वाली तस्करी को रोकने के लिए दिशा निर्देश भी जारी करेंगे। पिछले कुछ सालों में पंजाब के बजाय राजस्थान से सटी सीमा पर ड्रोन से तस्करी के मामले ज्यादा सामने आ रहे हैं। ऐसे में बीएसएफ इसको लेकर सख्ती बरत रहा है। एंटी ड्रोन डिवाइस पर भी बीएसएफ काम कर रही है।

आरोग्य मेले का भ्रमण किया

धौलपुर, (निसं)। जिले के संभागीय स्तरीय आरोग्य मेले का आगाज़ मेला ग्राउंड में 7 फरवरी से हुआ है जो कि 10 फरवरी तक चलेगा। आरोग्य मेले के दूसरे दिन शनिवार को स्वास्थ्य लाभ लेने हेतु जनसामान्य ने भारी रुचि दिखाई। जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ए एन सोमनाथ मेले के भ्रमण हेतु पहुंचे। उन्होंने जनमानस से परंपरागत आयुष चिकित्सा पद्धितयों का लाभ लेने की अपील की। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पचगांव की छात्राओं ने भी यहां पहुंचकर आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी, योग एवं प्राकृतिक के चिकित्सा साथ–साथ अन्य विधा जैसे पंचकर्म, अग्निकर्म, प्रकृति परीक्षण आदि के बारे में लाभ प्राप्त किया। अति. निदेशक आयुर्वेद सतीश लावनिया ने छात्राओं को मेले का भ्रमण कराया।

राशिफल रविवार 9 फरवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, आर्द्रा नक्षत्र सायं 5:53 तक, विष्कुम्भ योग दिन 12:07 तक, बव करण प्रात: 7:51 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मकर, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–मिथुन, बुध–मकर, गुरू–वृष, शुक्र–मीन, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

त्रिपुष्कर योग सायं 5:53 से रात्रि 7:56 तक है। आज भीष्म द्वादशी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:34 से 9:56 तक, लाभ–अमृत 9:56 से 12:41 तक, शुभ 2:03 से 3:26 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:12, सूर्यास्त 6:10

मेष

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। आज अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है।

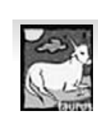

वृष

आज आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय के नवीन स्त्रोत सामने आयेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

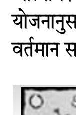

कर्क

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। आज अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रतिष्ठित व्यक्तियों से संबंध बनेंगे।

कन्या

परिवार में शुभ–मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

तुला

व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

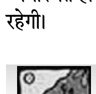

वृश्चिक

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

धनु

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मकर

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। आज नये–पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

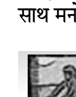

कुंभ

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। आज महत्वपूर्ण के संबंध में उचित सोच–विचार होगा।

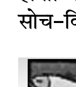

मीन

घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। आज अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। महत्वपूर्ण प्रयासों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।